4

आपका विवाह सफल हो सकता है ...

समझ लेने से कि प्रेम ही कुंजी है

जब आपका विवाह होता है तो आप चाहते हैं कि आपका विवाह स्थिर रहे। अगर आप चाहते हैं कि जीवन भर आपका विवाह स्थिर रहे तो सबसे आवश्यक है वचनबद्धता। आपकी और आपके साथी दोनों की एक-दूसरे के प्रति और विवाह के प्रति वचनबद्धता होनी आवश्यक है। अगर आपकी वचनबद्धता मजबूत है तो आपका विवाह टिका रहेगा, चाहे लाख मुसीबतें आएं।

फिर भी मज़बूत वचनबद्धता के लिए प्रेम ही मुख्य है। यदि आपका प्रेम इतना अधिक है तो यह वचनबद्धता बनी रह सकती है और रहेगी।

यह कहने का अर्थ क्या है कि प्रेम ही वचनबद्धता के लिए मुख्य है? यूनानी लोगों में ''प्रेम'' में चार अक्षर हैं, जो चार प्रकार के प्रेम को दर्शाते हैं। वे चारों तरह के प्रेम खुशहाल वैवाहिक जीवन के लिए आवश्यक हैं।

इरोस-कामुक प्रेम

पहली तरह का प्रेम, जिसे यूनानियों ने इरोस नाम दिया है। इरोस रोमांस भरा, सैक्स का प्रेम है जिसके लिए अंग्रेजी भाषा में ''erotic'' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। यूनानी भाषा में नये नियम में इरोस शब्द नहीं मिलता, पर इसका एक विचार (उदाहरण के रूप में, 1 कुरिन्थियों 7 में) मिलता है। नया नियम कामुक प्रेम को बुरा नहीं कहता, पर इसे विवाह के बिस्तर तक सीमित करता है। पुराने नियम में श्रेष्ठगीत में यह मिलता है!

स्पष्ट है कि नवविवाहितों के सम्बन्ध में कामुक या सैक्स या शारीरिक प्रेम की महत्वपूर्ण भूमिका है। वैवाहिक जीवन में सैक्स का आनन्द लेना चाहिए। यह दम्पत्ति के लिए विवाह के बाद इकट्ठे रहने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

पर आरम्भ में पति-पत्नी में सैक्स के प्रति जोश शीघ्र ही खत्म हो सकता है, और सैक्स उबाऊ या रूटीन में शामिल हो जाता है। समय के साथ, पति-पत्नी को अपने शारीरिक सम्बन्ध में आनन्द नहीं आता। इस तथ्य से पति-पत्नी को दो सुझाव मिलते हैं, जिन्हें मानने की आवश्यकता है।

सैक्स सम्बन्धों को सुधारें

पति-पत्नी को अपने उस व्यवहार को बदलना होगा, जिससे दोनों को सैक्स उबाऊ लगता है। दोनों को कुछ ऐसा करना चाहिए, जिससे उन्हें सैक्स जीवन का आनन्द आए और उत्तेजना मिले। पति को कभी भी पत्नी से प्रेम जताना बन्द नहीं करना चाहिए और पत्नी को भी कभी भी पति को आकर्षित करने का अवसर नहीं छोडना चाहिए। यदि पति-पत्नी सैक्स लाइफ को

आनन्ददायक बनाने के लिए उत्सुक रहेंगे, जैसे हम घर की साफ-सफाई और रख-रखाव के लिए हमेशा सतर्क रहते हैं, तो ऐसा कोई कारण नहीं है जिससे उनका कामुक प्रेम बढ़ने के बजाय कम हो जाए।

सैक्स सम्बन्ध को अनुपात में रखें

इसके साथ ही यह तथ्य कि जैसे-जैसे वर्ष बीतते हैं, दम्पत्ति का रोमांटिक प्रेम धीरे-धीरे ठंडा पड़ जाता है, लेकिन उनके लिए यह जानना आवश्यक है कि *इरोस* ही सब कुछ नहीं है, जिस पर विवाह टिका रहे। कामुक प्रेम विवाह में आनन्ददायक होता है, और इससे वैवाहिक सम्बन्ध मज़बूत होते हैं, लेकिन यह काफी नहीं है। जैसे-जैसे समय बीतता है शारीरिक आकर्षण फीका पड़ने लगता है, जब पत्नी वैसी नहीं दिखती जैसे विवाह के समय दिखती थी, पति गंजा हो जाता है और उसकी कमर का आकार भी छह इंच बढ़ जाता है, तब उनके वैवाहिक जीवन को स्थिर कौन रखेगा? कामुक प्रेम तो नहीं! परन्तु विवाह होने पर आप को याद रखना चाहिए कि सैक्स का आकर्षण आपके वैवाहिक जीवन में आवश्यक तो है, पर यह आपके वैवाहिक जीवन को पचास वर्षों तक बनाए नहीं रख सकता। आपको कामुक प्रेम के साथ-साथ प्रेम के अन्य प्रकार भी चाहिए।

ममता-पारिवारिक प्रेम

ममता यानी पारिवारिक किस्म का प्रेम और लगाव यूनानी शब्दकोष में दूसरी किस्म का प्रेम है। नये नियम में यह नकारात्मक रूप में मिलता है।[1]

> डेविड रोपर कहते हैं,
>
> यह वह प्रेम या वफ़ादारी है, जो बहुत ही गहरे बन्धन पर आधारित है। सांसारिक साहित्य में [शब्द] का इस्तेमाल अपने राज्य या अपने शासक के प्रति निष्ठा या मूर्तिपूजा को घरेलू मूर्ति के लिए भी हुआ है। ...
>
> इसे ''मिनी आन्टी का प्रेम'' कहते हैं। हम मिनी आन्टी से प्रेम करते हैं और उसकी मदद करना चाहते हैं, उसके शारीरिक (*eros*) आकर्षण के कारण या उनकी सुन्दरता के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि वह हमारी मिनी आन्टी है। वह वृद्ध हो सकती है, बहरी हो सकती है और उनकी नज़र कमज़ोर हो सकती है, लेकिन फिर भी वह हमारी मिनी आन्टी ही होगी।[2]

वाइन ने कहा है *storgos* (*storge* के संज्ञा रूप) का अर्थ है '' 'आत्मीय प्रेम,' विशेषतया माता-पिता का बच्चों के लिए और बच्चों का माता-पिता के लिए।''[3]

ममता शब्द का इस्तेमाल वैवाहिक सम्बन्ध में भी होता है यह सुझाते हुए कि पति-पत्नी दोनों के एक-दूसरे के प्रति कुछ फर्ज़ हैं क्योंकि दोनों एक ही परिवार का हिस्सा हैं। वास्तव में समाज की भलाई उसके अधिकतर उन्हीं लोगों पर निर्भर होती है जो अपने विवाह की कसमों पर खरे उतरते हैं। विवाह के लिए लागू करने पर शुद्ध आचरण की भावना, समाज और देश के लिए क्या अच्छी है, इसको समझना, अपने पति/पत्नी के प्रति अपने दायित्व को समझना, अपने

दायित्व को निभाने की भावना रखना, सब ममता से ही मेल खाता है। रूमानी प्रेम फीका पड़ जाने पर समाज की भलाई के लिए साथ-साथ, सम्बन्धित परिवारों के बच्चों का और उस दम्पत्ति की भलाई के लिए ऐसे मूल्य विवाह को बनाए रखने में सहायता करेंगे।

फिलिया-मैत्री प्रेम

वैवाहिक सम्बन्ध के लिए सबसे महत्वपूर्ण है, फिलिया-मैत्री प्रेम। रोपर के अनुसार नये नियम में फिलिया का इस्तेमाल एक ही बार किया गया है (याकूब 4:4, में जहां इसका अनुवाद ''मित्रता'' है) जबकि इसके क्रिया रूप *Phileo* का इस्तेमाल पच्चीस बार हुआ है। इक्कीस बार तो यह सुसमाचार की पुस्तकों में ही आया है अधिकतर यूहन्ना में[4] *Philos* संज्ञा रूप का ''मित्रता'' अनुवाद हुआ है। इसका मूल मिश्रित शब्दों में मिलता है, जैसे ''Philadelphia'' जिसका अर्थ है, ''भाईचारे की प्रीति'' और ''philanthropy'' का अर्थ है, ''मानवता का प्रेम।''[5]

क्या आपने कभी रुक कर विवाह करने के अर्थ पर विचार किया है? पहली बात, तो यह कि इसका अर्थ है कि आपको उस एक व्यक्ति यानी अपने पति या अपनी पत्नी के साथ अगले पच्चास साल तक या प्रभु ने चाहा तो उससे भी अधिक साथ रहना होगा। इकट्ठे सोने और इकट्ठे जागने पर, जिसे आप सोने से पहले और सुबह उठने पर देखेंगे, वह आपका साथी ही होगा। अगर आप पचास साल इकट्ठे रहें और दिन में दो बार खाना मिलकर खाते हैं, तो इतने समय में, आप इकट्ठे 36,000 बार भोजन कर चुके होंगे। हर रात सोने के आठ घंटे या काम करने के सप्ताह के चालीस घंटे न गिनते हुए, आप सप्ताह में लगभग बहत्तर घंटे एक साथ बिताएंगे।

आपका समय अधिकांश उसी के साथ बीतेगा, इसलिए आपको हर सम्भव प्रयास करना चाहिए कि आप दोस्त बल्कि *अच्छे दोस्त* बनकर रहें। आप ऐसा कैसे कर सकते हैं? अगर आप दोस्त बनाना चाहते हैं तो आपका व्यवहार दोस्ती भरा होना चाहिए-आपको एक-दूसरे की आदतों और पसन्द का पता लगाना होगा ... आपको अपनी भावनाओं को उसे दिखाना होगा और उसकी भावनाओं को समझना और सुनना होगा। यदि आपके दोस्त को कोई परेशानी हो तो आपका व्यवहार सहानुभूति भरा होना चाहिए; आपको अपना अधिक से अधिक समय अपने दोस्त के साथ बिताना चाहिए और लगातार एक-दूसरे को उत्साहित करना चाहिए। आपको दूसरों से अधिक अपने साथी के साथ संगति को महत्व देना चाहिए।

अगापे-मसीही प्रेम

''प्रेम'' के लिए चौथा शब्द *अगापे* है। नये नियम में ''प्रेम'' के लिए सबसे पसन्दीदा शब्द *अगापे* है। परमेश्वर के मनुष्य के लिए प्रेम के लिए (उदाहरण के लिए देखें यूहन्ना 3:16) और उस प्रेम के लिए जो यीशु ने दूसरों के पापों के लिए उस समय दिखाया, जब वह क्रूस पर मरा (उदाहरण के लिए देखें गलातियों 2:20)। मसीही लोगों में ऐसा ही प्रेम होना चाहिए, जब बाइबल एक-दूसरे से प्रेम करना सिखाती है (यूहन्ना 13:34; 1 यूहन्ना 4:7; मत्ती 22:39)। इफिसियों 5:25-33 के अनुसार बाइबल में पतियों को भी अपनी पत्नियों से ऐसा ही प्रेम रखने के लिए कहा गया है:

> हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी-अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। इस लिए कि हम उस की देह के अंग हैं। ... पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।

अगापे क्या है

यह *अगापे* प्रेम क्या है ? यह केवल या मुख्यतया भावना नहीं है। प्रेम के बदले में कुछ देना भी अनिवार्य नहीं है। यह केवल उन्हीं लिए ही नहीं है, जिन्हें प्रेम की आवश्यकता है। यह अपनी ही सेवा करने वाला प्रेम नहीं है,[6] बल्कि यह तो त्याग करने वाला प्रेम है जो जिसे प्रेम करता है जो प्रियजन की बेहतरी की खोज में रहता है। इसमें भावनाओं से बढ़कर इच्छा है। इसके लिए आवश्यक नहीं कि जिस मनुष्य से हम प्रेम करें वह प्रेम के योग्य हो।[7]

ऐसे प्रेम का उदाहरण यीशु ने बहुत अच्छी तरह से दिया है। क्या जब यीशु इस संसार के लोगों को बांधने आया तो उसने इस बात का इंतजार किया कि पहले लोग बचाने के लिए काबिल हो जाएं फिर मैं उन्हें बचाऊंगा ? नहीं ''जब हम पापी ही थे, यीशु हमारे लिए मरा'' (रोमियों 5:8)।

अगापे प्रेम की व्याख्या करने के लिए आवश्यक है कि पहले पौलुस द्वारा 1 कुरिन्थियों 13:4-7 में की गई इसकी विशेषता की व्याख्या पर ध्यान दें।

> प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।

जिसके अन्दर ये सारी विशेषताएं हैं, वह प्रेम के योग्य है; जिस कारण ऐसे मनुष्य के साथ रहना आसान होता है। अगर आप चाहते हैं कि आपका वैवाहिक जीवन लम्बे समय तक बना रहे तो प्रेम करने वाले व्यक्ति बनें। उदाहरण के लिए हम ऐसे मनुष्य की व्याख्या कैसे करेंगे, जो अपनी पत्नी से ऐसे प्रेम करता हो ?

> ... वह उसके साथ ''धीरज'' से काम लेगा और उसके प्रति ''दयालु'' रहेगा। वह ''घमण्डी'' नहीं रहेगा; उसका उसके प्रति ''दुर्व्यवहार'' नहीं होगा (वह नम्र होगा); वह उसके मामले में (अपना) भला नहीं चाहेगा (या स्वार्थी नहीं होगा)। वह उसके मामले में (आसानी से) बुरा नहीं मानेगा। वह उसकी की गई (गलतियों) का हिसाब नहीं

रखेगा। (वह उसकी पिछली गलतियों के कारण उससे डाह नहीं रखेगा) वह सब बातें [सह लेगा] (किसी भी बात के बावजूद उससे प्रेम करता रहेगा) और वह उसकी सब बातों को (मानेगा) और (शक नहीं करेगा)।[8]

अगापे लम्बे वैवाहिक जीवन की कुंजी है। जब कामुक भावनाएं फीकी पड़ जाती हैं, जब एक-दूसरे के प्रति कर्त्तव्य निभाने की इच्छा कम हो जाए, जब दोस्ती नामुमकिन सी लगे, तब मसीही प्रेम अर्थात *अगापे* प्रेम हर हालात में वैवाहिक जीवन को बनाए रखता है। ऐसा प्रेम बना रहता है, ''भला हो या बुरा, अमीर हो या गरीब, बीमारी में हो या तंदुरुस्ती में।'' क्यों? क्योंकि जो ऐसा प्रेम करता है वह अपने से अधिक उसकी चिन्ता करता है, जिसे वह प्रेम करता है। जब दो लोगों के बीच *अगापे* प्रेम होता है, तो वह अपनी मर्जी को छोड़कर एक-दूसरे को पहल देते हैं।

अगापे क्या करता है: कुछ उदाहरण

अगापे एक प्रकार का प्रेम है, जिसे एक विवाहित स्त्री दिखाती है। अन्धे हो चुके उसके पति की सेवा करके जब वह अपना कोई भी काम करने में असमर्थ हो। यह ऐसा प्रेम है, जिसे पति अपनी बीमार पत्नी की सेवा करने के द्वारा दिखाता है। *अगापे* प्रेम एक मज़बूती देता है कि वह अपनी पत्नी की पक्षाघात के बाद जब वह घर का कोई भी काम करने में असमर्थ हो, सेवा करे या पत्नी को मरने तक अपने अपाहिज पति की सेवा करने की शक्ति प्रदान करता है!

अगापे प्रेम की कमी आदमी को अपनी बीस साल से ब्याहता पत्नी को तलाक देकर कमसिन स्त्री से विवाह करने को प्रेरित करती है। ऐसे प्रेम के बिना पति अपनी इच्छा से अपना रास्ता चुनने की कोशिश करता है या अपनी इच्छानुसार न मिल पाने पर पत्नी अपना क्रोध दिखाती है। जिसमें *अगापे* प्रेम नहीं बढ़ता वह अपने पति या पत्नी के साथ जिसने उसके साथ किसी भी तरह का बुरा व्यवहार किया हो, वफादारी नहीं दिखाता और इसे वह उचित मानता है।

अगापे कैसे बढ़ता है

ऐसा प्रेम एक चुनौती है। *अगापे* प्रेम में परमेश्वर अपने लोगों से चाहता है कि वे मानवीय स्वभाव को उतार फैंके अर्थात अपने स्वभाव के अनुसार व्यवहार करने से इनकार करे और परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव को पहन ले और उसके जैसा बने (देखें 2 पतरस 1:4)। परन्तु वह अपने बच्चों को वैसा बनने में मदद करता है जैसा बाइबल में कहा गया है; वह अपने पति या अपनी पत्नी सहित दूसरों से सही ढंग से प्रेम करने की शक्ति देता है! इसके अलावा वह किसी से भी ऐसा प्रेम करने में एक ही रात में सिद्ध होने की अपेक्षा नहीं करता। जैसे यीशु ने दूसरों से प्रेम किया वैसे प्रेम करना सीखना तो जीवन भर की जाने वाली खोज है। उस रास्ते पर तुरन्त चलना आरम्भ कर दें, ताकि आप वो बन सके, जिसकी आपको आवश्यकता है-और इससे आपका विवाह सफल रहेगा!

सारांश

आपका विवाह जीवन भर चल सकता है अगर आपके दिल में अपने साथी के लिए इन

चारों प्रकार का प्रेम है। अपने विवाह के साथी के साथ एक प्रेमी की तरह जुड़ें, जिसे आप शारीरिक सुख देकर और शारीरिक सुख लेकर आनन्द प्राप्त करते हैं। याद रखें कि आप दोनों सामाजिक रीति/रिवाज़ के साथ बन्धन में बंधे हैं और इस बन्धन को निभाना आपका कर्त्तव्य है। अपने पति या पत्नी को अपना दोस्त समझें–एक अच्छा दोस्त–जिसके साथ आपका सब कुछ साझा है। आपको इसी ताक में रहना चाहिए कि आप किसी और की अपेक्षा अपने साथी के साथ अधिक से अधिक समय बिताएं। समझ लें कि आपका साथी एक प्राणी है, जिसे परमेश्वर ने अपने स्वरूप पर बनाया है–जिसके लिए मसीह मरा और यह आपका विशेषाधिकार है कि आप उससे वैसे ही प्रेम करें जैसे मसीह ने आप से किया! अपने आप को न्यौछावर कर देने वाली नि:स्वार्थ भावना से प्रेम करें, जो अपने प्रेमी के लिए सब कुछ उत्तम चाहे कुछ बदले में पाने की इच्छा किए बिना। अगर आप ऐसे प्रेम करेंगे तो आपका वैवाहिक जीवन मरने तक चलता रहेगा!

एच. नॉरमन व्हाइट ने अपनी पुस्तक *सो यू आर गैटिंग मैरिड* के एक पाठ में बड़ी अच्छी तरह लिखा है, वह कहता है कि विवाह में ''प्रेम की वचनबद्धता''[9] सम्मिलित है। जब आप विवाह करते हैं तो आप अपने साथी को वैसा ही प्रेम करने का वचन देते हैं जैसे परमेश्वर हम से करता है, तब तक जब तक आप दोनों जीवित रहें!

टिप्पणियां

[1]रोमियों 1:31 और 2 तीमुथियुस 3:3 में यूनानी धर्मशास्त्र में ***astorgos*** (***storgos***) से पहले आने वाला उसके जीवन को नकारता है, और इसका अनुवाद ''अप्रिय'' है। अन्य संस्करणों में यह शब्द ''बिना स्वाभाविक लगाव'' का अर्थ देता है (KJV; ASV)। RSV, NRSV, NIV में रोमियों 1:31 का अनुवाद ''हृदय रहित'' है जबकि फिलिप्स का अनुवाद यह सुझाव देता है कि ऐसे प्रेम की कमी वाले लोग ''माता-पिता के प्रति कर्त्तव्य का मज़ाक उड़ाते थे।'' रोमियों 12:10 में ***storge*** एक मिश्रित शब्द के भाग के रूप में मिलता है, जहां इसका अनुवाद ''भाईचारे की प्रीति'' (KJV) या ''भाईचारे का लगाव'' (RSV) है। [2]डेविड रोपर, *गेटिंग सीरियस अबाउट लव* (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 1992), 19. [3]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम वाइट, जूनि., *वाइन'स क़म्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैसटामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 16. [4]रोपर, 21. नये नियम के उन हवालों में जहां ***phileo*** क्रिया शब्द मिलता है, यूहन्ना 11:36 जहां लाज़र की कब्र पर यीशु को रोते देखने के बाद यहूदी लोग पुकार उठे थे, ''देखो, वह उससे कितना प्रेम रखता है''; यूहन्ना 16:27, जहां यीशु ने कहा, ''पिता तो आप ही तुझ से प्रेम रखता है''; और यूहन्ना 21:15, 16, 17, जहां पतरस ने प्रभु के इस प्रश्न का कि क्या वह उससे प्रेम रखता है यह कहकर उत्तर दिया था, ''हां, प्रभु; तू तो जानता है कि मैं तुझ से प्रेम रखता हूं।'' 1 कुरिन्थियों 16:22; तीतुस 3:15; प्रकाशितवाक्य 3:19 भी देखें। [5]वही, 20. [6]''भाइयों के प्रति या सामान्य अर्थ में मनुष्यों के प्रति, मसीही प्रेम भावनाओं से नहीं उभरता, यानी यह न तो स्वभाविक आवेग से चलता है और न अपने आपको केवल उन्हीं के लिए खर्च करता है जिनमें कुछ कमी पाई गई है। प्रेम सब की भलाई चाहता है, रोमियों 15.2 ...'' (सी. एफ. हॉज एण्ड डब्ल्यू. ई. वाईन, द *एपिस्टल्स टू द थेस्सलोनियन्स* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1959], 105)। [7]उदाहरण के लिए जब यीशु ने अपने चेलों को ''अपने शत्रुओं से प्रेम रखो'' (मत्ती 5:44) की आज्ञा दी तो ''प्रेम'' के लिए उसके द्वारा इस्तेमाल शब्द *अगापे* का क्रिया रूप था। उसने उन्हें अपने शत्रुओं के द्वारा लगाव की चेतावनी नहीं दी बल्कि अपनी इच्छा के कार्य के द्वारा बेहतरीन करने को कहा। [8]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (नवम्बर 1997): 19 में कोय रोपर, ''द क्रिश्चियन हसबैंड।'' [9]एच. नॉरमन राइट, ''कमिटमेंट टू लव,'' *सो यू आर गैटिंग मैरिड* (वैंचुरा, कैलीफोर्निया: रीगल बुक्स, 1985), 51-66. जब आप अपने पति या पत्नी से प्रेम के लिए अपने आपको दे देते हैं तो आपका समर्पण और भी प्रेम का कारण बनता है जो और समर्पण का कारण और जो और प्रेम का कारण होता है।